सल्तनत काल में संगीत

डॉ0 अनीता कश्यप
वरिष्ठ प्रवक्ता
राघुनाथ गर्ल्स पी0 जी0 कालेज, मेरठ

सारांश

सल्तनत काल में राजनैतिक क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ। फलस्वरूप भारत का प्राचीन संगीत अपनी परम्परा से हटता जा रहा था। भारतीय संगीत धर्म प्रधान था। मुसलमान शासक भारतीय धर्म को समाप्त करके इस्लाम का प्रचार कर रहे थे। इस युग में संगीत के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुये और भारतीय संगीत को एक नवीन वातावरण में से होकर चलना पड़ा यद्यपि राजनैतिक घटित से अस्थिरता का सामान्य था फिर भी भारतीय समाज में एक दूसरे के साथ सभ्यता और संस्कृति का आदान प्रदान होने लगा। सल्तनत काल में संगीत का पर्याप्त विकास दृष्टि गोजर होता है।

मुख्य बिन्दु

1. सूफी
2. चिश्ती सम्प्रदाय
3. दास वंश
4. काजी, नगोरी
5. संगीत गोष्ठियाँ
6. रूप जीवा

सल्तनत काल भारतवासियों के लिये बहुत कठिन था। मुसलमान शासकों के अत्याचारों से हिन्दू जनता पिसी जा रही थी। इस्लाम का जरा सा विरोध करने पर भी हिन्दुओं को प्रंशसता पूर्वक दण्ड दिया जाता था। ऐसे समय में सुल्तान अपने साथ संगीत की परम्परा लाये। इनसे पूर्व ईश्वरीय भक्ति में धुव्रपद गाने की परम्परा थी। सुल्तानों के आने से संगीत श्रंगार रस प्रधान, ख्याल गायकी पूर्ण हो गया।

तत्कालीन मुस्लिम जगत में सूफी दार्शनिकों एव साधको के चार प्रमुख समुदाय थे। इनमें से चिश्ती सम्प्रदाय संगीत को आध्यात्मिक साधना का सर्वाधिक साधना मानता है। इस चिश्ती सम्प्रदान की समाज में संगीत की कुछ परम्पराएँ थी।

इस्लाम में संगीत वर्णित होने पर भी कुछ सुल्तान संगीत प्रेमी थे। दास वंश का संस्थापक शम्सुद्दीन इल्सुमिस संगीत प्रेमी था। चिश्ती सम्प्रदाय के काजी हमीहुदीन नगोरी रात

दिन संगीत में मग्न रहते थे। कहा जाता है कि एक बार उनके नृत्य के लिये काँटे और अंगारे बिछा दिये गये थे। काजी नगोरी काँटों और अंगारों पर नाचते रहे।

ग्यासुद्दीन बलवन की सभाओं में संगीत होता था। इनके पुत्र मुहमद ने तो सूफी सन्तों को बुलाकर संगीत गोष्ठियों का आयोजन किया।

कैकुबाद के संगीत प्रेम से तो गली–गली में सुमधुर गजल गायक उत्पन्न हो गये।

खिलजी वंश के सुल्तान संगीत रसिक थे। जलालुद्दीन खिलजी के दरबार में संगीत का वातावरण था सुन्दरियाँ अपनी मोहक अदाओं और संगीत से सुल्तान का मनोरंजन करती थी।

अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में अच्छे गायक और कव्वाल रहते थे। इस काल में दूर से गायिकायें और नृर्तकियों ने विरन्तर अपनी कला का प्रदर्शन किया।

मोहम्मद बिन तुगलम के काल में दरबार में संगीत को प्रश्रय प्राप्त था। दरबार में जलसों का आयोजन किया जाता था। ईद के दिन दरबार में संगीत का आयोजन किया जाता था। इस दरबार में हारे हुये राजाओं के राज्य की बन्दी स्त्रियाँ राजकुमारी गाती और नष्त्य करती थी। बाद में उन्हें राज्य के अमीर और राजकुमारों को भेट स्वरूप दे दिया जाता था।

फिरोज तुगलग संगीत रसिक बादशाह था। यह कट्टरपन के औरंगजेब की तरह था। तत्कालीन इतिहासकार जियाउद्दीन वरनी कहता था। दरबार का प्रत्येक प्रतिष्ठत कार्यरत सुन्दर गाने वाली रूपमती वासियों का आनन्द लेने तथा चिन्ता से मुक्त होने के लिये उन्हें सैनिक अभियानों में साथ ले जाया करता था। प्रत्येक शिविर में गायक गाने गाया करते थे। सेना में अत्यधिक समपन्नता सुख आनन्द और निशि चिंता के कारण बहुत से मुसलमान सुल्तान के साथ फिरा करते थे और उन्हें सेना से लौटना अच्छा न लगता था।

अतः कहा जा सकता है कि सुल्तान संगीत प्रेमी थे। दरबार में गायिकाओं नर्तकियाँ और वादक रहते थे। उनकी उपस्थिति सुल्तानों के मनोरंजन का साधन थी। ''संगीत गोष्ठियाँ सभा'' और त्योहारों आदि पर संगीत कार्यरत का आयोजन किया जाता था। दरबार में संगीत विधमान था।

सल्तनात काल में सांस्कृतिक क्षेत्र में भी संगीत विधमान था। मुसलमानों के भारत आगमन के कारण उनकी धर्म व संस्कृति का प्रभाव भारत पर पड़ा। इनकी एक विकसित संस्कृति थी। भारतीय संस्कृति और इस्लाम की संस्कृति के सम्भिश्रण से एक नई संस्कृति की नींव पड़ी। यदपि इन संस्कृतियों के आदान प्रदान हुआ। तथापि दोनों संस्कृतियाँ अपना प्रथम असितत्व बनाये रही। मुसलमान शासकों के अत्याचारों से पीड़ित हिन्दू जनता ईश्वर भक्ति में लीन होकर शान्ति की कामना करने लगी। अतः इस समय भक्ति आन्दोलन जोर पकड़ने लगा।

एक ओर निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा थी। दूसरी ओर निर्गुण प्रेमाश्रयी शाखा थी। इसके साथ ही सूफी सन्तों ने ईश्वर प्रेम में संगीत गोष्ठियों का आयोजन किया। निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा में कबीर, नानक तथा प्रेमीश्रयी शाखा में महाप्रभु चैतन्य और मलिक मौहम्मद ज्ञायसी इत्यादि आते हो। सूफी सन्तों में इस समय चिश्तीय सम्प्रदाय का अधिक प्रभाव था। इसमें मुईइद्दीन

चिश्ती प्रमुख थे। सूफी सन्तों की रवानाकाओं में काल कव्वाली का बहुत जोर था। यह लोग ईश्वरीय प्रेम में लीन होकर अपनी सुध बुध खो बैठते थे। भक्ति आन्दोलन के माध्यम से संगीत का प्रचार हुआ। भक्ति आन्दोलन ने धर्म और समाज की काया पलट कर दी। साथ ही हिन्दुओं के धार्मिक स्थलों जैसे मथुरा, अयोध्या, वाराणसी में भी संगीत की खूब उन्नति हुई क्योंकि यहाँ पर मन्दिरों की बहुतायात थी और भारतीय संगीत को मन्दिरों में आश्रय प्राप्त हुआ।

सल्तनत काल में संगीत साहित्य में अत्यधिक वृद्धि हुई। फारसी में अनेक काव्य ग्रन्थों की रचना के साथ ही ब्रजभाषा एवम हिन्दी में अनेक काव्य रचनाये की गयी। खुसरों ने ऐतिहासिक तथा साहित्यक दो प्रकार के ग्रन्थों की रचना की। अमीर खुसरों ने संगीत कला पर ''आवाजे खुसरवी'' नामक ग्रन्थ लिखा।

संगीत को इस युग में व्यापक पैमाने पर राजकीय संरक्षण और प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। जौनपुर में इब्राहिम शाह शर्की और उसके पौत्र हुसैन शर्की भारतीय संगीत से बड़ा प्रेम करते थे। उनके दरबार में भारतीय संगीत की बड़ी उन्नति हुई। वही से ख्याल गायकी की एक नवीन पद्धति चली और कम से कम तीन नये रागों का आविष्कार हुआ। इसी प्रकार कश्मीर के शासक जैनुल आबदीन के दरबार में भारतीय राग गाये जाते थे और संगीतज्ञों का आश्रय मिलता था।

सिकन्दर लोदी को संगीत से बड़ा प्रेम था। इसके राज्य काव्य में फारसी में संगीत का पहला ग्रन्थ ''लहजत–ए–सिकन्दर शाही'' लिखा गया। ''लहजत'' संस्कृत में लिखे गये संगीत के ग्रन्थों जैसे ''संगीत रत्नावर'' और संगीत कल्पतक पर आधारित है।

गायन के क्षेत्र में भी नवीन रागों व नये गीतों का निर्माण भी उल्लिखित है। खुसरों के द्वारा अनेक नये राग तथा नये गीतों का प्रचार हुआ। उनके द्वारा चलायी गयी गायन शैली की कौल अथवा कव्वाली के नाम से जाना गया। इस समय अमीर खुसरों अथवा संगीत से भी प्रभावित हुये। इसका एक कारण यह भी था क्योंकि इस समय ''अवध'' की रूप जीवाएँ गायिकाएँ और नृतकियाँ भी दिल्ली दरबार में जाने लगी थी। अतः देशी और ईरानी संगीत का सम्मिश्रण हुआ। शेख निजामुद्दीन के काल में कव्वाली की विशेष उन्नति दृष्टि गोजर होती ही बड़े–बड़े सूफी सन्तों के खानकाओं में संगीत सभाये होती थी। बड़े धूमधाम से कव्वलियाँ गायी जाती थी। इस बात पर शेख निजामुद्दीन औलिया का ग्यासुद्दीन तुगलक और उसकी शह पर मुल्लाओं ने बड़ा विरोध किया। किन्तु वे सन्तों के संगीत सम्मेलनों में अवरोध नही पहुँचा सके। इस प्रकार धीरे–धीरे कव्वाली सूफी मत का विशिष्ट अंग बन गयी। अजमेर के ख्वाजा मुईनद्दीन चिश्ती भी कव्वलियों के प्रेमी थे। इस काल में कव्वाली पूर्ण रूप से प्रचलित दिखाई देती थी।

अमीर खुसरों, हसन कला सजरी, सैयद मुहम्मद इमाम, सैयद मुहम्मद मूसा, अहमद अयाज इत्यादि मुरीदों ने निजामुद्दीन चिश्ती की प्रेरणा से लोक भाषा में चिश्ती विचारों से पूर्व गीता की रचना की। टी०एन० रावकर के अनुसार अमीर खुसरों ने खुशसार और भारत के कलाकारों की प्रतियोगिता आयोजित की। भारतीय रागों की मुकाय पद्धति में वर्गीकृत

किया और ऐसे सकीर्ण रागों को जन्म दिया जिनमें भारतीय और अभारतीय रागों को समावेश था। गजल गायकों में महमूद मुहम्मद और ईसा खुवादी अद्वितीय थे। इस युग में कव्वाल भी अनेक थे।

अनेक वाधों का प्रचलन भी सल्तनत काल में दृष्टि गोजर होता है। मुहम्मद तुगलक के समय में भी अनेक वाध प्रचलित हुये उसके दरबार में तथा यात्रा में नकारे, हुन्दुकियाँ झाँझ बजते थे। इसके अतिरिक्त ढोल नफीरी इत्यादि वार्घा का प्रयोग होता था।

अलाउद्दीन खिलजी के राजकाल में भारतीय और ईरानी दोनों पद्धतियों के कलाकार थे। उस समय निम्नलिखित वाघ बजाये जाते थे। चंग, सारंगी, डफ, दस्तक, खाव, शहनाई।

वाध यंत्रों में सरोद दिलरूबा मुसलमानों की देन है।

सल्तनत काल में नष्त्य का भी प्रचलन देखने को मिलता है। अनेक सुल्तान नष्त्य के प्रेमी थे। कुतुबुद्दीन खिलजी, नट, नर्तकी वेश में स्वयं नष्त्य और रूपजीवायों की कला का सम्मान भी करता था।

मालवा के ''परमार'' राजाओं के काल 800 से 1305 ई० में भी संगीत और नृत्य भी खुब उन्नति हुई।

सिकन्दर लोदी एक योग्य एवं शक्तिशाली राजा था। इस समय में कव्वाली गजल ख्याल हुमरी आदि अधिक प्रचलित हो रही थे। नृत्यों में नवीन कथाओं का समावेश हुआ। जिनमें अरबी, ईरानी कथायें थी। इस समय के रचे नाटकों में संगीत प्रचुर मात्रा में मिलता है। दरबार में संगीत को स्थान प्राप्त था। मीरान सैयद नूरूल्लाह तथा सैयद इठनूई मूल सिकन्दर के दरबार में पहले कलाकारों को सुनते थे और योग्यता प्रमाणित होने पर ही बादशाह की सेवा में उपस्थित करते थे। मियाँ ताहा महान संगीतज्ञ थे। जिनसे बाह्मण और संगीतज्ञ शिक्षा लेते थे।

इस प्रकार सल्तनत काल में संगीत का पर्याप्त विकास दृष्टिगोचर होता है। भारतीय संगीत का इस काल में एक नई दिशा, नया जीवन प्राप्त हुआ। इस काल के संगीत की प्रमुख विशेषताओं कव्वाली का जन्म तथा ख्याल गायकी का जन्म ईरानी फारसी संगीत का मिश्रण था।

इस काल में हिन्दु मुस्लिम सम्पर्क के कारण उतनी और दक्षिणी संगीत का विभाजन हुआ। उत्तरी संगीत में मुस्लिम संगीत का मिश्रण हो गया था। जबकि दक्षिणी संगीत मुस्लिम प्रभाव से वंचित रहा।

सल्तनत काल सांस्कषतिक पुनरूत्थान का समय था। एक प्रकार से भक्ति आन्दोलन का भी युग माना गया। सल्तनत काल भी एक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इस समय अवध से रूप जीवाओं का आगमन हुआ। परिणाम स्वरूप ईरानी और देशी संगीत का सम्मिश्रण हुआ।

सूफी सन्तों की रवानराहों में संगीत इस काल की प्रमुख विशेषता थी इनके कव्वाली के प्रोगाम कई दिनों तक चलते थे कव्वाली का प्रचार प्रसार भी प्रचुर मात्रा में दृष्टिगोजर होता है।

गजल ख्याल गायकी ठुमरी इत्यादि का भी प्रचार दृष्टिगोजर होता है। अतएव सल्तनत काल में संगीत की पर्याप्त प्रसार पचार व उन्नति हुई।

सन्दर्भ

1. खिलजी कालीन भारत प्र० 115
2. उगलक कालीन भारत भाग 2 प्र० 117
3. दी परमार्स, प्रतिफल भाटिया प्र० 350
4. उत्तर मैसूर कालीन भारत बी० एन० पुरी प्र० 134
5. मुसलमान और भारतीय संगीत प्र० 57
6. मुसलमान और भारतीय संगीत प्र० 58